धर्म रक्षक अशोक सिंघल

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 04 -10 October 2026

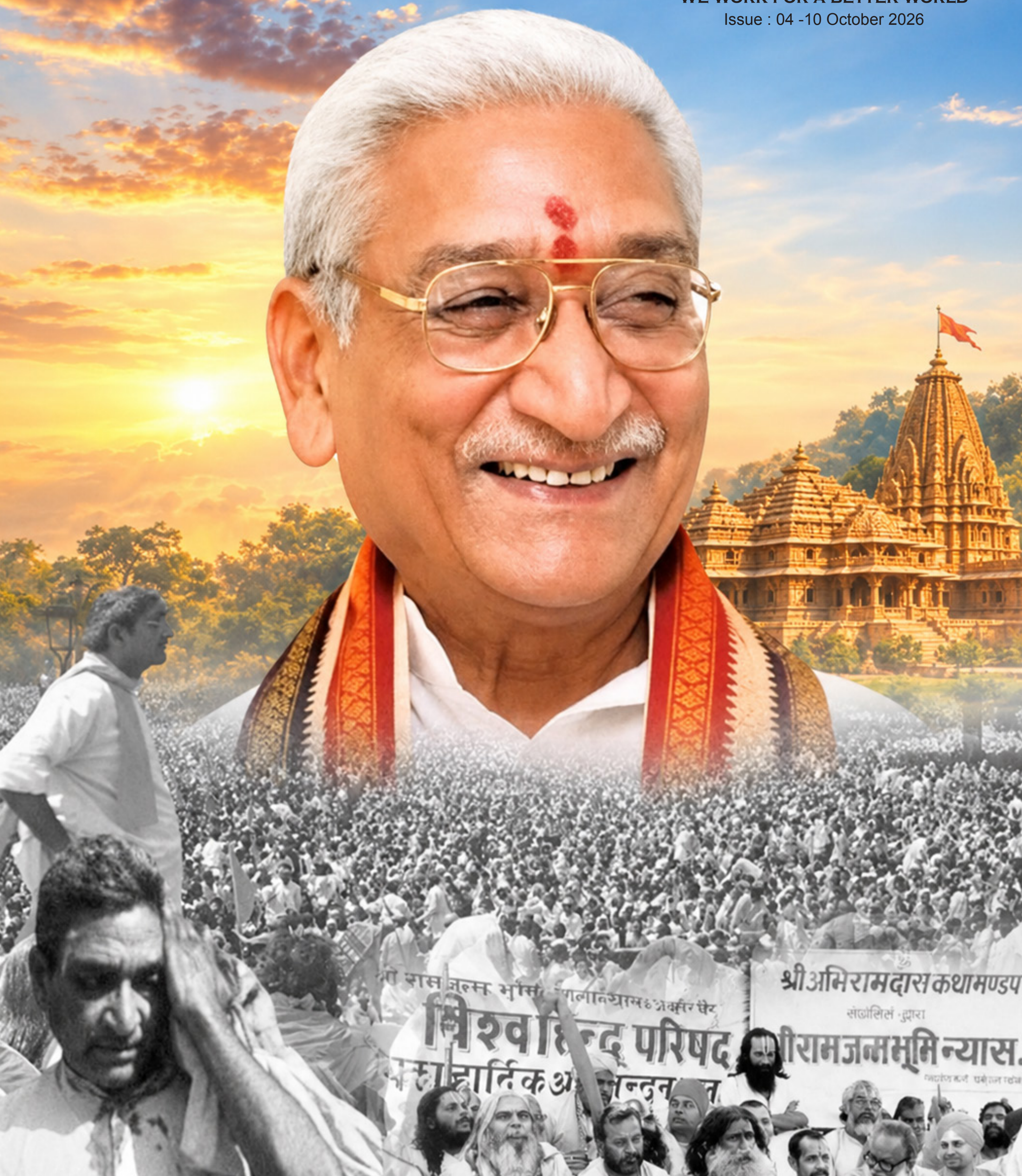

पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
देवभक्ती के
मोहक सुगंध से करें,
देवी का पवित्र पूजन!
Agarbatti with
Natural Ingredients
कुलदेवी उपासना
लक्ष्मी
सरस्वती
पार्वती
मसाला अगरबत्ती
अनुभव करें भक्ति की शक्ति!
चंदन
गुलाब
मोगरा
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 67035564/5699, Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

बजरंग दल के कार्य व यात्रा के उद्देश्य	दीपक द्विवेदी	04
एक व्यक्ति नहीं, एक युग की चेतना	डॉ. शिवेश प्रताप	06
विश्व हिंदू परिषद् के प्राण तत्व	सचिन तिवारी	09
कैप्टन स्मित मच्छार के साहस की प्रशंसा	डॉ. संतोष झा	11
चेहरे के पीछे की पीड़ा	डॉ. मुकेश असीमित	12
युवाओं में मानसिक विकार गम्भीर चुनौती	डॉ. कृष्णा नंद पांडेय	14
जेन-जी व मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियां	रचना प्रियदर्शिनी	17
महाराष्ट्र में गहराता सूखा संकट	डॉ. दीपक कोहली	19
पारदर्शिता की प्रासंगिकता या विरोध की प्रक्रिया	अलकेश चतुर्वेदी	21
अभाविप की जीत की लहराती पताका	राघव झा	23
नारी शक्ति ने लगाई स्वर्ण पदकों की झड़ी	प्रवीण सिन्हा	26
इधर भी देखें...	संकलन	28
समाचार		29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

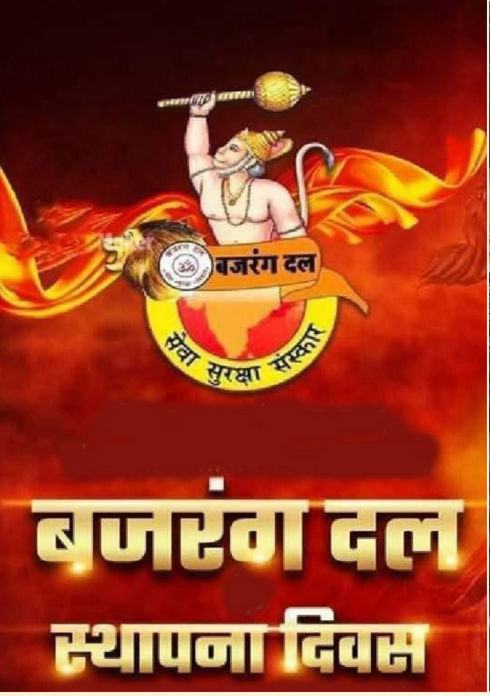

बजरंग दल के कार्य व यात्रा के उद्देश्य

स्थापना

बजरंग दल का उद्देश्य युवाओं को शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सक्षम बनाना तथा उन्हें समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाना है।

दीपक द्विवेदी

रामकथा में हनुमान शक्ति , सेवा, समर्पण, साहस, अनुशासन और संकट में आगे बढ़कर जिम्मेदारी निभाने के प्रतीक हैं। बजरंग दल ने अपने ध्येय-वाक्य के रूप में इसी भावना को स्वीकार किया है। संगठन ने 'जयकारे वीर बजरंगी, हर हर महादेव' घोष-वाक्य तथा 'सेवा-सुरक्षा-संस्कार' बोध-वाक्य दिया गया है।

बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद की युवा इकाई है। बजरंग दल का उद्देश्य युवाओं को शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सक्षम बनाना तथा उन्हें समाज, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाना है। बजरंग दल युवाओं की ऐसी इकाई है, जो शारीरिक अनुशासन, बलोपासना, तीर्थ-सेवा, रक्तदान, आपदा राहत और सामुदायिक सेवा से जुड़ी है। बजरंग दल में शक्ति का अर्थ आक्रामकता या उग्रता ही नहीं, आत्मविश्वास, अनुशासन, साहस और सेवा है। जिसमे युवाओं में शारीरिक क्षमता, बौद्धिक विकास, नैतिक चरित्र, आध्यात्मिक चेतना, अनुशासन, सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना है।

अयोध्या से शुरुआत - 8 अक्टूबर 1984 का वह दिन

बजरंग दल की स्थापना को समझने के लिए 1984 के उस वातावरण को समझना होगा, जब राम जन्मभूमि का प्रश्न सार्वजनिक और संगठित आंदोलन का रूप ले रहा था। विश्व हिंदू परिषद ने 1984 में राम जन्मभूमि से सम्बंधित गतिविधियों को आगे बढ़ाया। इसी क्रम में श्रीराम-जानकी रथयात्रा निकाली गई। अयोध्या से यात्रा के प्रस्थान के समय सुरक्षा को लेकर स्थिति बनी और तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुरक्षा देने से मना किए जाने के बाद संतों ने युवाओं से यात्रा की जिम्मेदारी सम्भालने का आह्वान किया। इसी संदर्भ में हनुमानजी के रामकाज के प्रतीक को सामने रखते हुए युवाओं की टोली को 'बजरंग दल' नाम दिया गया। 8 अक्टूबर 1984 को गठन हुआ और विनय कटियार इसके संस्थापक अध्यक्ष बने ।

राम जन्मभूमि आंदोलन से राष्ट्रव्यापी विस्तार तक

1984 के बाद बजरंग दल की गतिविधियां राम जन्मभूमि आंदोलन के साथ तेजी से बढ़ीं।

1990 के दशक में इसका विस्तार उत्तर प्रदेश से बाहर विभिन्न राज्यों तक हुआ। इस दौर में संगठन की गतिविधियों में युवा संगठन, प्रशिक्षण, धार्मिक यात्राएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल होते गए। 1996 में प्रयागराज का गौ-संरक्षण अभियान में लगभग एक लाख बजरंग दल स्वयंसेवक जुटे थे। 1996 में ही अमरनाथ यात्रा, जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी धमकियों के कारण सुरक्षा की चुनौती थी। बजरंग दल ने 1996 में देशभर के युवाओं से अमरनाथ यात्रा में शामिल होने का आह्वान किया। 2005 में बूढ़ा अमरनाथ यात्रा, जो जम्मू कश्मीर के पूंछ क्षेत्र में है, का नया अध्याय शामिल हुआ।

संगठन के कार्य-तीन प्रमुख आयाम

* **संगठनात्मक कार्य** -साप्ताहिक मिलन, बलोपासना केंद्र, प्रशिक्षण, कार्यकर्ता निर्माण और युवा संगठन।
* **आंदोलनात्मक कार्य** -धर्म, संस्कृति, सामाजिक पहचान और राष्ट्रीय मुद्दों से जुड़े प्रश्नों पर अभियान एवं जनजागरण।
* **रचनात्मक कार्य** -रक्तदान, वृक्षारोपण, चिकित्सा शिविर, सेवा, तीर्थ सहायता और राहत कार्य।

इसके साथ ही 2023 में शौर्य जागरण यात्राएं जो 8,000 प्रखंडों और 90,000 गांवों तक पहुंचाने की योजना बताई गई थी। एक गांव, एक मंदिर, एक श्मशान से सामाजिक समरसता का प्रयास किया गया। तीर्थयात्रा में सेवा का व्यावहारिक पक्ष जैसे भीड़ प्रबंधन, पेयजल व्यवस्था, चिकित्सा सहायता, खोया-पाया केंद्र, आपातकालीन सहायता आदि। इसके साथ जनजागरण के विषयों में जनसांख्यिकीय परिवर्तन, धर्मांतरण, मंदिरों तक पहुंच, राष्ट्रीय चरित्र और सामाजिक एकता जैसे मुद्दे भी शामिल किए गए हैं।

वार्षिक कार्यक्रम के तहत बलोपासना दिवस, हनुमान जयंती/चैत्र पूर्णिमा के दिन, अखंड भारत संकल्प दिवस 14 अगस्त को , हुतात्मा दिवस एवं रक्तदान 30 अक्टूबर-2 नवंबर तक, शौर्य दिवस, बूढ़ा अमरनाथ यात्रा श्रावण शुक्ल पक्ष को आयोजित किए जाते है। इनके अतिरिक्त नई भर्ती अभियान, त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम और खेलकूद प्रतियोगिताएं भी संगठनात्मक गतिविधियों का हिस्सा हैं।

वर्तमान में कार्य

जुलाई 2026 में सेवा सप्ताह के कार्य में स्वच्छता , चिकित्सा और पर्यावरण से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए गए। अपने 21वें वर्ष में बाबा बूढ़ा अमरनाथ यात्रा का उद्घाटन 16 अगस्त 2026 को जम्मू के अभिनव थिएटर में हुआ। बजरंग दल की वर्तमान गतिविधियों में नशामुक्ति अभियान एक महत्वपूर्ण सामाजिक आयाम के रूप में उभर रहा है। 2026 में विश्व हिंदू परिषद् और बजरंग दल ने 'नशा छोड़ो-राष्ट्र जोड़ो' के संदेश के साथ नशामुक्ति अभियान को आगे बढ़ाया। सितंबर 2026 की झारखंड की प्रांतीय बैठक में बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक किशन प्रजापत ने युवाओं को नशे से दूर रखने और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाने पर जोर दिया एवं युवाओं को स्वावलम्बी और कौशल-सम्पन्न बनाने की बात भी कही गई। इस 42 वर्ष की यात्रा को एक वाक्य में बांधना हो तो कहा जा सकता है कि 1984 का युवा आंदोलनकारी संगठन 2026 तक आते-आते आंदोलन, संगठन, सेवा, तीर्थ-व्यवस्था और सामाजिक अभियानों के कई आयामों वाला संगठन बन चुका है।

राष्ट्र केवल भूमि नहीं, एक जीवंत संस्कार है बजरंग दल का घोषित मूल सूत्र सेवा-सुरक्षा-संस्कार है और उसके कार्यों में युवाओं को संगठित करना, समाज की सेवा करना तथा देश, धर्म-संस्कृति और हिंदू समाज की सुरक्षा के लिए उन्हें तैयार करना शामिल है। आज जब युवा पीढ़ी के सामने नशा, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक विस्मृति जैसी चुनौतियां हैं, तब नशामुक्ति, रक्तदान, चिकित्सा सेवा, वृक्षारोपण, तीर्थ-सेवा और युवा जागरण जैसे कार्य उसके घोषित उद्देश्य को सामाजिक गतिविधियों से जोड़ते दिखाई देते हैं।

अंततः राष्ट्रप्रेम केवल सीमा की रक्षा के साथ ही अपनी मातृभूमि, संस्कृति, परम्पराओं, सांस्कृतिक प्रतीकों और समाज के प्रति कर्तव्यबोध का नाम है। यदि प्रत्येक युवा में सेवा, अनुशासन, संस्कार और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो, तो यही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति बन सकती है। इसी भावना में बजरंग दल का संदेश राम काज कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम सेवा और कर्तव्य की निरंतर प्रेरणा के रूप में देखा जा सकता है। ■■■

एक व्यक्ति नहीं एक युग की चेतना

अशोक सिंघल

अशोक सिंघल की जन्मशती पर उन्हें याद करने का सबसे सार्थक तरीका केवल अतीत के आंदोलनकारी नेता के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक भारत में सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक चेतना के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में भी जानें।

27 सितम्बर 1926 को जन्मे अशोक सिंघल ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से धातुकर्म अभियांत्रिकी की शिक्षा प्राप्त की। जिस समय देश में आज की तरह आईआईटी और आधुनिक तकनीकी संस्थानों का विस्तृत नेटवर्क नहीं था, उस समय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय देश की प्रतिभाओं के प्रमुख केंद्रों में था। एक युवा इंजीनियर के सामने अपने व्यक्तिगत करियर को आगे बढ़ाने के अनेक अवसर थे, लेकिन उन्होंने अपना जीवन एक अलग दिशा में मोड़ने का निर्णय लिया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और आगे चलकर पूर्णकालिक प्रचारक बने। भारत जैसे विशाल और बहुलतापूर्ण समाज में किसी विचार को व्यापक जनचेतना में बदलना आसान नहीं होता। विशेषकर तब, जब वह विचार केवल राजनीतिक दल या चुनावी मंच के माध्यम से नहीं, बल्कि संत समाज, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, स्थानीय कार्यकर्ताओं और आम जनमानस के बीच पहुंचाना हो। अशोक सिंघल ने इसी क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। रामजन्मभूमि आंदोलन उनके सार्वजनिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय बना। 1980 के दशक में रामजन्मभूमि का प्रश्न धीरे-धीरे धार्मिक एवं सांस्कृतिक विमर्श से निकलकर राष्ट्रीय सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बना। धर्म संसदों, संत सम्मेलनों, यात्राओं, जनसभाओं और व्यापक संगठनात्मक प्रयासों के माध्यम से यह आंदोलन देश के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचा। इसमें अशोक सिंघल की भूमिका एक प्रमुख संगठनकर्ता की रही। उनकी विशेषता यह थी कि वे स्वयं पारम्परिक अर्थों में चुनावी राजनीति के नेता नहीं थे। उन्होंने किसी राजनीतिक पद की खोज नहीं की। इसके बावजूद उनके नेतृत्व में खड़ा हुआ संगठनात्मक नेटवर्क इतना प्रभावशाली बना कि उसने राष्ट्रीय राजनीति के एजेंडे को प्रभावित किया।

यही अशोक सिंघल के जीवन का शायद सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक-सामाजिक पाठ है, सत्ता और प्रभाव एक ही चीज नहीं हैं। लोकतंत्र में सत्ता चुनावों से प्राप्त होती है, लेकिन सामाजिक प्रभाव समाज के भीतर विचार, संगठन, नेतृत्व और जनभागीदारी से निर्मित होता है। अशोक सिंघल ने औपचारिक सत्ता के बाहर रहकर सामाजिक प्रभाव निर्मित करने की इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाया।

डॉ. शिवेश प्रताप

रामजन्मभूमि आंदोलन की चर्चा करते समय 6 दिसम्बर 1992 की घटना को अलग नहीं किया जा सकता। बाबरी ढांचे का विध्वंस भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास की अत्यंत महत्वपूर्ण और विवादास्पद घटनाओं में रहा है। अशोक सिंघल उस आंदोलन के प्रमुख संगठनकर्ताओं में थे। लेकिन 1992 की घटना

से आगे भी अशोक सिंघल का संगठनात्मक योगदान एक व्यापक अध्ययन का विषय है। उनकी एक बड़ी चुनौती हिंदू समाज के भीतर मौजूद सामाजिक विभाजनों को पाटना भी थी। किसी भी व्यापक सामाजिक एकता की परियोजना के सामने जातिगत विभाजन एक महत्वपूर्ण प्रश्न रहा है। रामजन्मभूमि आंदोलन में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास इसी संदर्भ में देखे जाते हैं। 1989 में कामेश्वर चौपाल द्वारा रामजन्मभूमि के शिलान्यास की पहली ईंट रखे जाने का प्रसंग इसी सामाजिक विस्तार के प्रतीक के रूप में अधिकतर उल्लेखित किया जाता है।

अशोक सिंघल की सोच का एक महत्वपूर्ण पक्ष सेवा और संगठन के सम्बंध में भी दिखाई देता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा, आपदा राहत, महिला सशक्तिकरण, आजीविका और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्रों में विभिन्न सेवा गतिविधियों का विस्तार हुआ। इससे एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक सिद्धांत सामने आता है, कोई भी विचार तब तक स्थायी सामाजिक शक्ति नहीं बन सकता, जब तक वह समाज के जीवन में उपयोगी संस्थाओं और सेवाओं का रूप न ले।

अशोक सिंघल की दृष्टि भारत तक सीमित नहीं रही। प्रवासी भारतीय समुदायों के बीच भी सांस्कृतिक सम्पर्क और संगठनात्मक नेटवर्क विकसित करने पर जोर दिया गया। उनके समय में भारतीय मूल के लोगों के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव को व्यापक वैश्विक संदर्भ देने का प्रयास हुआ। आज जब भारतीय प्रवासी समुदाय भारत की वैश्विक पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, तब उस दौर की इन पहलों को भी नए दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। अशोक सिंघल का व्यक्तित्व इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन को निजी उपलब्धियों की अपेक्षा सार्वजनिक उद्देश्य के लिए समर्पित किया। आज के समय में जब सफलता का अर्थ प्रायः पद, प्रतिष्ठा, आर्थिक उपलब्धि और व्यक्तिगत पहचान से लगाया जाता है, तब उनका जीवन एक अलग प्रश्न सामने रखता है, क्या किसी बड़े उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत जीवन को समर्पित करना भी सफलता का एक रूप हो सकता है? अशोक सिंघल ने भारतीय सार्वजनिक जीवन में संस्कृति, संगठन और जनचेतना के सम्बंध को एक नए पैमाने पर प्रस्तुत किया। उनकी विरासत को केवल एक आंदोलन या एक नारे में समेटना सम्भव नहीं है। उनकी विरासत एक संगठनात्मक पद्धति में दिखाई देती है, विचार को संगठन में, संगठन को जनभागीदारी में और जनभागीदारी को दीर्घकालिक सामाजिक प्रभाव में बदलने की पद्धति। ■■■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

पंजीयन करें

हिंदी विवेक
We Work For Better World

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

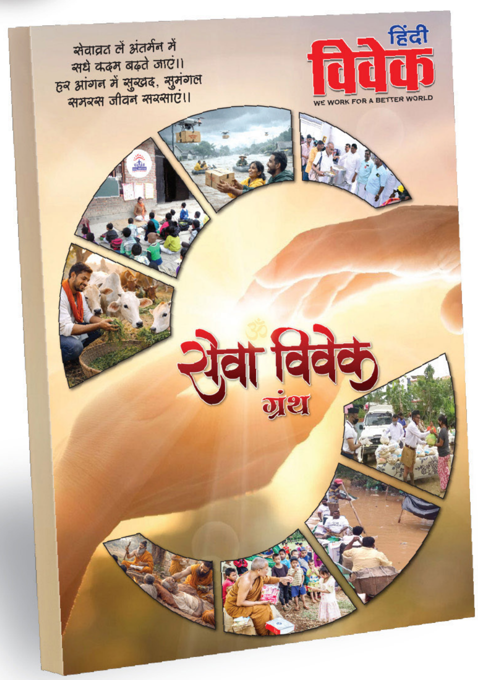

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

ग्रंथ का मूल्य ₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद के प्राण तत्व

सचिन तिवारी

अशोक सिंघल

विश्व हिंदू परिषद में अशोक सिंघल की लम्बी यात्रा ने उन्हें केवल एक पदाधिकारी नहीं, बल्कि एक ऐसे संगठनकर्ता के रूप में स्थापित किया जिसने संत समाज, कार्यकर्ताओं और व्यापक जनसमाज के बीच संवाद की एक मजबूत संरचना बनाने का प्रयास किया।

हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनकी पहचान किसी पद या संस्था से आगे बढ़कर एक व्यापक संगठनात्मक भूमिका के रूप में स्थापित होती है। अशोक सिंघल का नाम ऐसे ही व्यक्तित्वों में लिया जाता है। विश्व हिंदू परिषद के साथ उनका सम्बंध केवल एक पदाधिकारी के रूप में नहीं था, बल्कि उन्होंने संगठन को जनसम्पर्क, संत-समाज के संवाद और व्यापक सामाजिक अभियानों के माध्यम से एक बड़े मंच के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से 1980 और 1990 के दशक में विश्व हिंदू परिषद की गतिविधियों और रामजन्मभूमि आंदोलन के विस्तार के साथ अशोक सिंघल का नाम प्रमुखता से सामने आया।

अशोक सिंघल जी का जन्म 15 सितम्बर 1926 को आगरा में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से धातुकर्म अभियांत्रिकी की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए और आगे चलकर पूर्णकालिक प्रचारक बने। संघ में काम करते हुए उन्होंने उत्तर प्रदेश और दिल्ली सहित विभिन्न क्षेत्रों में संगठनात्मक दायित्व निभाए। यही अनुभव आगे चलकर विश्व हिंदू परिषद में उनके संगठनकर्ता व्यक्तित्व की आधारभूमि बना। संघ के प्रचारक के रूप में प्राप्त अनुभव ने उन्हें कार्यकर्ता निर्माण, जनसंपर्क और विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ संवाद की व्यावहारिक समझ दी।

1981 के मीनाक्षीपुरम धर्मांतरण प्रकरण के बाद विहिप की गतिविधियों में तेजी आई। सिंघल ने इस प्रसंग को सामाजिक स्तर पर सम्बोधित करने के लिए संगठनात्मक प्रयास किए। उस समय उस क्षेत्र के दलित समुदायों से जुड़े मंदिर-प्रवेश एवं सामाजिक सम्मान के प्रश्नों को भी विहिप की गतिविधियों में शामिल किया गया तथा अनेक मंदिरों के निर्माण कराया गया। इन कार्यों में अशोक सिंघल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

विश्व हिंदू परिषद की स्थापना 1964 में संत समाज एवं सामाजिक नेतृत्व को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से हुई थी। किंतु संगठन को व्यापक जनाधार देने की चुनौती लगातार बनी हुई थी। अशोक सिंघल के विहिप से जुड़ने के बाद संगठन के काम में एक नई संगठनात्मक सक्रियता दिखाई देती है। 1980 के दशक की शुरुआत में उन्होंने विहिप के केंद्रीय दायित्वों को सम्भाला और शीघ्र ही संगठन के प्रमुख चेहरों में शामिल हो गए। उन्होंने संगठन को केवल कार्यालय

और पदाधिकारियों तक सीमित रखने के बजाय संतों, धार्मिक नेताओं, साधु-संतों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और सामान्य समाज के बीच ले जाने पर जोर दिया। अशोक सिंघल की सबसे बड़ी संगठनात्मक विशेषता थी-विभिन्न धाराओं को एक मंच पर लाने की क्षमता। भारत में धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं की विविधता अत्यंत व्यापक है। अलग-अलग सम्प्रदायों, अखाड़ों, मठों और धार्मिक परम्पराओं के संतों के बीच समन्वय स्थापित करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण कार्य था। सिंघल ने निरंतर यात्राओं, बैठकों और संवाद के माध्यम से संत समाज के साथ सम्बंध विकसित किए। 1984 में दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित प्रथम धर्म संसद इसी प्रयास का महत्वपूर्ण परिणाम थी। इस धर्म संसद ने आगे चलकर विहिप की गतिविधियों को व्यापक दिशा देने वाले मंच का रूप लिया।

यहीं से रामजन्मभूमि का प्रश्न भी विहिप के प्रमुख अभियानों में शामिल हुआ। अशोक सिंघल ने इस मुद्दे को केवल एक धार्मिक विषय के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक जनसम्पर्क और संगठनात्मक अभियान के रूप में आगे बढ़ाया। देश के विभिन्न हिस्सों में यात्राएं, सभाएं, संत सम्मेलन और कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए गए। इन गतिविधियों ने विहिप के संगठनात्मक नेटवर्क को व्यापक बनाया और अशोक सिंघल आंदोलन के प्रमुख संगठनकर्ताओं में स्थापित हुए। रामजन्मभूमि आंदोलन के संदर्भ में उनकी भूमिका को समझने के लिए उनकी कार्यशैली पर ध्यान देना आवश्यक है। वे केवल मंच से भाषण देने वाले नेता नहीं थे। उनका जोर लगातार कार्यकर्ता तैयार करने, स्थानीय स्तर पर संगठन खड़ा करने और समाज के विभिन्न वर्गों से सम्पर्क बनाने पर था। बड़े कार्यक्रमों के पीछे छोटी-छोटी संगठनात्मक इकाइयों और कार्यकर्ताओं की भूमिका को वे महत्वपूर्ण मानते थे। इसी कारण उनका प्रभाव केवल राष्ट्रीय मंच तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अनेक राज्यों में संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क के कारण भी दिखाई दिया।

1989 में रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान शिलान्यास और इसके बाद के अभियानों ने विहिप को राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में ला दिया। अशोक सिंघल का संगठनात्मक योगदान रामजन्मभूमि तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने हिंदू समाज से जुड़े विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर विहिप के अभियानों को विस्तार देने का प्रयास किया। ■■■

साहस

कैप्टन स्मित मच्छार अदम्य साहस के धनी हैं। अपनी जान जोखिम में डालकर उन्होंने 174 विमान यात्रियों को बचाया और विमान की सुरक्षित लैंडिंग कराई।

कैप्टन स्मित मच्छार के साहस की प्रशंसा

डॉ. संतोष झा

आसमान में उड़ते यात्री विमान के कॉकपिट में चाकू से हमला, शरीर पर गम्भीर चोट और सामने 174 यात्रियों की जिंदगी। ऐसे कठिन हालात में भी भारतीय कैप्टन स्मित मच्छार ने धैर्य और साहस नहीं खोया। 30 सितम्बर को दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाईदुबई की उड़ान में सह-पायलट के हमले के बाद विमान तेजी से नीचे गिरने लगा। महज कुछ सेकंड में विमान ने करीब 14,300 फीट की ऊंचाई गंवा दी। उस समय विमान में सवार यात्रियों और चालक दल के लिए हर क्षण बेहद महत्वपूर्ण था। गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद कैप्टन मच्छार ने स्थिति को सम्भालने का प्रयास जारी रखा। उन्होंने कॉकपिट का दरवाजा खोलने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को कॉकपिट तक पहुंचने तथा हमलावर को काबू करने का अवसर मिला। विमान में मौजूद अन्य पायलटों ने नियंत्रण सम्भाला और उसे सऊदी अरब के तबुक हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतारा। इस तरह एक सम्भावित बड़ी त्रासदी को टालने में कैप्टन मच्छार समेत चालक दल के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। हमले में घायल कैप्टन मच्छार का उपचार चल रहा है। इसके बावजूद संकट की घड़ी में उन्होंने जिस धैर्य और कर्तव्यबोध का परिचय दिया, वह उल्लेखनीय है। विमान संचालन में पायलट की जिम्मेदारी केवल तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं होती। आपात स्थिति में त्वरित निर्णय, मानसिक संयम और यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना भी उसके दायित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कैप्टन मच्छार ने इसी जिम्मेदारी का परिचय दिया।

उनकी बहादुरी की प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सार्वजनिक रूप से सराहना की। प्रधान मंत्री ने वीडियो कॉल के माध्यम से कैप्टन मच्छार से बातचीत की और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने दूसरों की जान बचाने के लिए अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प दिखाया। उनके प्रयासों से बड़ी त्रासदी को टालने में सहायता मिली। भारतीय पायलट स्मित मच्छार ने बुधवार को 9/11 जैसे हमले को टाल दिया। कैप्टन मच्छार के साहस की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा हुई। इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने उनकी बहादुरी को सलाम करते हुए उन्हें 'सच्चा हीरो' बताया। उनकी बहादुरी की देश-विदेश में सराहना हो रही है। गुजरात सरकार ने भी कैप्टन मच्छार को 'विशिष्ट गुजरात गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित करने की घोषणा की है। मुख्य मंत्री भूपेंद्र पटेल ने उनके साहस की सराहना करते हुए शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

कैप्टन स्मित मच्छार की कहानी केवल एक विमानन घटना नहीं है। यह संकट के समय धैर्य, प्रशिक्षण, जिम्मेदारी और कर्तव्यबोध की मिसाल है। हजारों फीट की ऊंचाई पर जब हर सेकंड महत्वपूर्ण था, तब गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने यात्रियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका साहस यह संदेश देता है कि विपरीत परिस्थितियों में संयम, प्रशिक्षण और कर्तव्यनिष्ठा के बल पर बड़ी चुनौती का सामना किया जा सकता है। कैप्टन स्मित मच्छार की बहादुरी आज देश और दुनिया में चर्चा का विषय बनी हुई है। ■■■

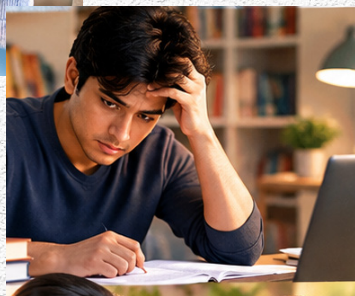

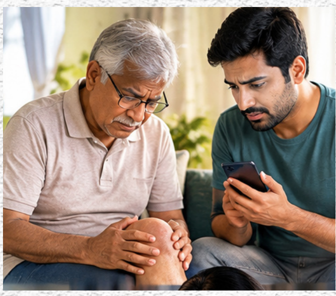

परेशानी

शरीर में कुछ परेशानी होती है तो हम दवा लेते हैं। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस हमें याद दिलाता है कि शरीर की तरह दिमाग की भी देखभाल बहुत आवश्यक है।

चेहरे के पीछे की पीड़ा

घर में किसी को बुखार हो तो घरवाले चिंतित होकर थर्मामीटर से बुखार मापने लगते हैं। घुटने में दर्द हो तो डॉक्टर का नम्बर ढूंढा जाता है। फोन पर चिंतित बच्चे माँ-बाप से कहते फिरेंगे, डॉक्टर को दिखाया? लेकिन कोई कहे कि उसे कई दिनों से कुछ अच्छा नहीं लग रहा, मन घबराता है या रात भर नींद नहीं आती, तो जो उत्तर अधिकांशत: तैयार मिलता है, वह बस यही होता है, इतना मत सोचा करो। मानो दिमाग के अंदर सोचने का कोई स्विच लगा है, जिसे ऑन-ऑफ किया जा सके। शरीर की परेशानी को हम बीमारी मान लेते हैं, मन की परेशानी को हम कभी आदत, कभी कमजोरी और कभी रोज-रोज का ड्रामा समझ बैठते हैं। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ हर समय खुश रहना नहीं है। दुख, डर, गुस्सा और चिंता जीवन में अवश्य भावनाएं हैं। स्वस्थ मन वह है जो इन भावनाओं का अनुभव कर सके, रोजमर्रा के काम कर सके, रिश्तों से जुड़ा रहे और कठिन समय में सहारा ले सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मानसिक स्वास्थ्य को केवल मानसिक रोग की अनुपस्थिति से कहीं अधिक व्यापक मानता है।

परेशानी यह है कि मन कोई साइनबोर्ड लेकर नहीं रहता। उसकी परेशानी दिखाई नहीं देती, इसलिए कई बार खुद व्यक्ति भी उसे पहचान नहीं पाता। वह कहता है, बस थक गया हूं और मन की थकान ऐसी कि आराम के बाद भी बनी रहती है। कोई हमेशा हंसने वाला अचानक लोगों से कटने लगता है। किसी की नींद और भूख का पैटर्न बदल जाता है, कोई पहले पसंद आने वाले कामों में रुचि खो देता है। चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है, ध्यान लगाना मुश्किल हो सकता है, मामूली निर्णय भी पहाड़ जैसे लग सकते हैं। कुछ लोगों को बार-बार सिरदर्द या पेट की परेशानी होने लगती है। सामान्य चिकित्सकीय परीक्षण और जांच के साथ उनके तनाव को समझना भी आवश्यक होता है। ये संकेत किसी एक बीमारी का प्रमाण नहीं हैं, पर लगातार बने रहें या जीवन को प्रभावित करें तो इन्हें गम्भीरता से सुनना चाहिए।

डॉ. मुकेश असीमित

हम अधिकतर मानसिक परेशानी की एक ही चित्र बनाते हैं- बिखरे बाल, असामान्य व्यवहार और दुनिया से बेखबर व्यक्ति। इस चित्र के कारण वह व्यक्ति हमारी दृष्टि से छूट जाता है जो समय पर कार्यालय पहुंच रहा है, परिवार का ध्यान रख रहा है, लेकिन अगर उसे करीब से देख पाएं तो यही व्यक्ति रात-रात भर अकेले में टूट रहा है। विद्यार्थी अच्छे अंक ला रहा होगा, पर असफल होने के डर से हर वक्त घिरा हुआ हो सकता है। बाहर का सामान्य दिखना भीतर की परेशानी को पूरी तरह झुठला नहीं रहा।

लेकिन यह सब संकोच की दीवार है। लोग क्या कहेंगे? हमारे यहां यह वाक्य कई बार बीमारी से बड़ा सवाल बन जाता है। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से मिलने की बात हो तो परिवार भी कह देता है, किसी को बताना मत। विवाह, नौकरी और सामाजिक छवि की चिंता में उपचार टलता रहता है। पुरुष से कहा जाता है, मजबूत बनो, मर्द के बच्चे हो तुम, रोते क्यों हो? महिला से कहा जाता है, सबके साथ

होता है, निभाना सीखो। बच्चे की चिंता को शरारत या ड्रामेबाजी मान लिया जाता है और बुजुर्ग के अकेलेपन को आयु का स्वभाव कहकर टाल दिया जाता है। इस तरह हर आयु की परेशानी के लिए हमारे पास एक वाक्य होता है, समय पर सुनने के लिए बस कुछ मिनट नहीं होते। कुछ भ्रांतियां भी रास्ता रोकती हैं। मानसिक समस्या होना चरित्र की कमजोरी नहीं है। केवल इच्छाशक्ति से प्रत्येक समस्या दूर नहीं होती। मनोचिकित्सक के पास जाने का मतलब यह नहीं कि व्यक्ति पागल है। उपचार का अर्थ हमेशा दवा भी नहीं होता। आवश्यकता के अनुसार बातचीत आधारित उपचार, काउंसलिंग, जीवनशैली में बदलाव, पारिवारिक सहयोग, दवा या इन सभी का मेल सहायता कर सकता है। और दवा की आवश्यकता पड़े तो उसे शर्म की वस्तु बनाने का कारण क्या है? चश्मा लगाकर साफ देखना हमें स्वीकार है; मन को स्पष्टता और राहत दिलाने वाली सहायता से इतना परहेज भला क्यों? कई मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों का प्रभावी उपचार सम्भव है, जबकि इसे कलंक मान लेना लोगों को सहायता लेने से रोकता है।

किसी अपने में बदलाव दिखे तो जासूस की तरह लक्षणों की सूची लेकर उसके सामने न बैठें। सहजता से पूछें, तुम कुछ परेशान लग रहे हो, बात करना चाहोगे? फिर उत्तर सुनें, बीच में निर्णय सुनाए बिना। तुम्हारे पास कमी किस बात की है? कहना परेशानी को छोटा कर देता है। अच्छा घर, नौकरी या परिवार होने पर भी व्यक्ति मानसिक कठिनाई से गुजर सकता है। यदि वह बात न करना चाहे तो उसके लिए जगह बनाए रखें, भरोसा कई बार एक बातचीत में नहीं बनता।

अपनी परेशानी पहचानना भी उतना ही आवश्यक है। कभी-कभार उदास होना या किसी परीक्षा, काम या पारिवारिक संकट में घबराना स्वाभाविक है। लेकिन उदासी, बेचैनी, निराशा, नींद या भूख में बदलाव अगर काफी लम्बे समय तक रहे, पढ़ाई और रिश्तों को प्रभावित करे, तो पेशेवर राय लेना समझदारी का काम है। गम्भीर या परेशान करने वाले लक्षण लगभग दो सप्ताह या उससे अधिक बने रहें तो सहायता लेने में देर नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति खुद को नुकसान पहुंचाने या जीवन समाप्त करने की बात करे, तो उसे अकेला न छोड़ें और तत्काल स्थानीय आपातकालीन सेवा या स्वास्थ्य विशेषज्ञ से सहायता लें।

मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल दैनिक जिंदगी से भी जुड़ी है-पर्याप्त नींद, नियमित शारीरिक गतिविधि, अपनों से बातचीत, आराम का निश्चित समय और आवश्यकता पड़ने पर सहायता मांगने से सहायता मिलती है। ■■■

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

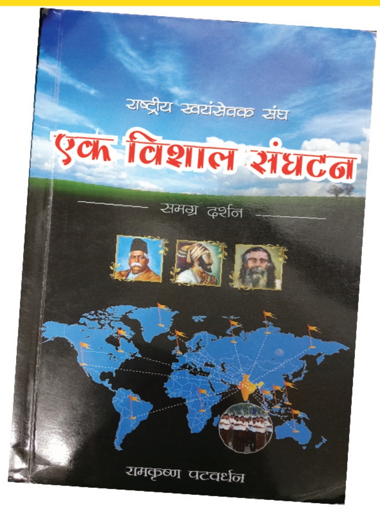

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

विश्व भर में प्रत्येक वर्ष 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के विषय में जागरूकता पैदा करना तथा मानसिक स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल हेतु उपयुक्त सुविधाएं जुटाना है।

युवाओं में मानसिक विकार गम्भीर चुनौती

डॉ. कृष्णा नंद पांडेय

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में 7 लोगों में एक व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य समस्या अथवा विकार से पीड़ित है। विश्व में लगभग 1.02 बिलियन लोग मानसिक विकारों की चपेट में हैं, जिनमें एंग्जायटी यानी चिंता और अवसाद यानी डिप्रेशन की स्थितियां अत्यधिक सामान्य हैं। ऐसे अधिकांश व्यक्तियों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध नहीं होती। मानसिक विकारों के कारण व्यक्ति लम्बी अवधि की अक्षमता, नि:शक्तता अथवा विकलांगता की स्थितियां झेलने को विवश होता है, प्रत्येक 6 व्यक्तियों में 1 व्यक्ति में असमर्थता की स्थिति पाई जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत के लगभग 10.6% युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं हैं। अनुमानतः 15% लोगों को मानसिक विकारों के इलाज की आवश्यकता है। भारत में मानसिक विकारों की व्यापकता जहां ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 6.9% है, वहीं शहरी क्षेत्रों में 13.5% है। सामाजिक कलंक, संसाधनों के अभाव तथा संरचनात्मक बाधाओं के चलते एक बड़ी संख्या में मानसिक रोगियों को समय पर मनोचिकित्सीय सुरक्षा नहीं मिल पाती।

भारतीय युवाओं पर मानसिक विकार का दंश

भारत में 30 से 40 वर्षीय युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर सबसे अधिक दबाव होता है। मनोविज्ञान में इसे रश ऑवर ऑफ लाइफ कहा जाता है। इस आयु वर्ग का लगभग प्रत्येक व्यक्ति वैवाहिक, पारिवारिक तथा बूढ़े माता-पिता की जिम्मेदारियां, कैरियर की पीक, घर, उसके लिए ईएमआई, तथा भविष्य की चिंता के दौर से गुजरता है।

इस आयु वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति आम मानसिक संघर्ष से जूझता दिखाई पड़ता है। जीवन की दैनिक आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए सुबह से रात तक भाग-दौड़, 5-6 घंटे से कम नींद, शरीर में कॉर्टिसोल हॉर्मोन की लगातार अधिकता जैसी स्थितियां उसे थकान, चिड़चिड़ापन का शिकार बना देती हैं, उसका किसी काम में मन नहीं लगता है। भविष्य की चिंता में वह एंग्जायटी का भी शिकार हो जाता है। 30 वर्ष की आयु के बाद इन मानसिक स्थितियों के कारण शरीर में बदलाव दिखाई देने लगते हैं, जिसे हेल्थ एंग्जाइटी का बढ़ना माना जा सकता है। 32 से 38 वर्षीय युवाओं में अचानक लगता है- मैं जो कर रहा हूं क्या यही करना चाहता था?। वैवाहिक जीवन, कैरियर, भविष्य के सपने इन सभी पर सवाल उठने लगते हैं। पति-पत्नी एक दूसरे को समय न देने के कारण छोटे-मोटे झगड़े, बच्चों की परवरिश, पढ़ाई, उनके कैरियर पर आपसी मतभेद, माता-पिता के स्वास्थ्य, उनकी आवश्यकताओं के सम्बंध में टकराव जैसी स्थितियां व्यक्ति को अकेलेपन की ओर धकेलने लगती हैं, और रिश्तों में कहीं-न-कहीं दरार पड़ जाती है। ऐसे में व्यक्ति अवसाद यानी डिप्रेशन की चपेट में आ तो जाता है, परंतु थकान या टेंशन कहकर टालने की प्रवृत्ति भी बढ़ जाती है, और वह धूम्रपान अथवा अन्य नशीली दवाइयों के सेवन के दलदल में फंसता

जाता है। महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में ये स्थितियां अधिकांश देखी जाती हैं। मानसिक समस्याओं से पीड़ित 30 से 40 वर्षीय कामकाजी युवा पुरुषों एवं महिलाओं की विशेषता यह होती है कि वे मानने ही नहीं कि उन्हें किसी प्रकार की मानसिक समस्या है, और उस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए मनोचिकित्सक की परामर्श लेने की आवश्यकता है। कार्य स्थल की एंग्जाइटी, आर्थिक संकट की एंग्जाइटी, पति-पत्नी अथवा विवाहेतर रिश्ते में दरार की एंग्जाइटी, नशे या जुए की लत पड़ जाने पर पैसे के लिए अपने सगे संबंधियों की हत्या करने की एंग्जाइटी से निपटने की असमर्थता में उत्पन्न अवसाद की स्थिति व्यक्ति में आत्मघाती विचारों को जन्म देती है। इस आयु वर्ग के यहां तक कि सम्पन्न परिवार के व्यक्तियों द्वारा भी आत्महत्या की घटनाएं आए दिन अखबारों की सुर्खियां बनती हैं। जबकि जीवन समाप्त करना कोई हल नहीं है। समय से मनोचिकित्सकीय की परामर्श लेने से गम्भीर अवसाद के ऐसे विकट दुष्परिणामों से बचा जा सकता है।

मानसिक विकारों के लक्षण

यदि किसी व्यक्ति में आमतौर पर चिंताग्रस्त अथवा निरंतर दुखी होने, मामूली बातों पर अनावश्यक क्रोधित होने, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता में कमी, उदासी अथवा अप्रसन्नता, लाचारी, नींद नहीं आने की समस्या, शरीर भार अथवा भूख लगने में बदलाव, प्रेरणा में कमी, नशीली दवाइयों के सेवन की लत, स्वयं को दोषी अथवा निकम्मा मानने, दूसरे लोगों से दूर एकांत में रहने, व्यक्तित्व, व्यवहार अथवा भावनाओं में परिवर्तन जैसे लक्षण दिखाई देने लगें तो उसे मनोचिकित्सक की परामर्श लेने की आवश्यकता पड़ती है। मानसिक स्वास्थ्य कायम रखने के लिए - नींद से समझौता किए बिना 7 घंटे की पर्याप्त नींद लेना दवाई की तरह प्रभावी होती है। स्क्रीन टाइम कम से कम रखना शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यावहारिक रूप से सुसंगत होगा। कोई एक नॉन प्रोडक्टिव शौक पालना मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, जैसे कि जिम जाना, किताब पढ़ना, संगीत सुनना, क्रिकेट या अन्य मनपसंद खेल खेलना, बागवानी करना, सुबह-शाम सैर करना, पार्क में मित्र मंडली से चर्चा करना, आदि। सप्ताह में एक दिन किसी मित्र या पार्टनर से ज्ञान दिए बिना दिल की बातें साझा करना अकेलेपन की घुटन से निश्चित बचाएगी। साल में एक बार अपने स्वास्थ्य की जांच अवश्य करानी चाहिए, जिससे ब्लड प्रेशर, शुगर, थायराइड आदि जैसे पैरामीटरों पर निगरानी रखी जा सके, और आवश्यकता पड़ने पर समय से इलाज करा कर उन पर नियंत्रण रखा जा सके।

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

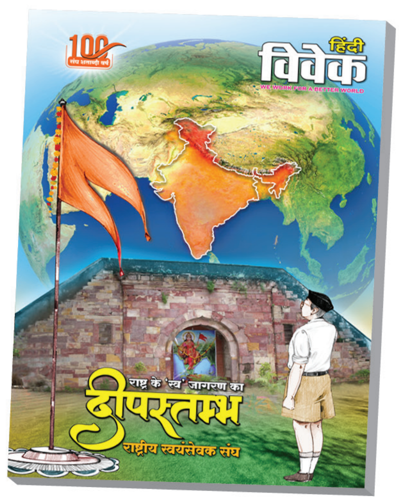

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

50+
YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

समस्या

जेन-जी पीढ़ी डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया के बीच पली-बढ़ी है, जो अपने अधिकारों के प्रति पहले से कहीं अधिक सजग और मुखर है। लेकिन इसी डिजिटल जीवनशैली ने उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गम्भीर संकट भी खड़ा कर दिया है।

रचना प्रियदर्शिनी

जेन-जी व मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियां

सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था में हमेशा से ही ऐसा होता रहा है कि युवा पीढ़ी खुद को अपनी पूर्व पीढ़ी से बेहतर, समझदार तथा सूचना सम्पन्न मानती है। उसे लगता है कि 'कर लो दुनिया मुट्ठी में'। सच तो यह है कि हर पीढ़ी अपने समय की चुनौतियों के अनुरूप समाज और राजनीति को नई दिशा देने का प्रयास करती है। स्वतंत्रता संग्राम की पीढ़ी ने स्वतंत्रता का सपना साकार किया, जबकि उसके बाद की पीढ़ियों ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने और आर्थिक विकास की नींव रखने में योगदान दिया।

वर्तमान में दुनिया जिस पीढ़ी की ओर सबसे अधिक आशा से देख रही है, वह है जेनरेशन-जेड। माना जाता है कि वर्ष 1997 से 2012 के बीच जन्मे युवाओं की यह पीढ़ी डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्विक सम्पर्क के युग में पली-बढ़ी है। इनके सोचने, संवाद करने और अपनी बात रखने के तरीके पहले की पीढ़ियों से काफी अलग हैं।

भारतीय जनसंख्या अनुमान (2026) के विश्लेषण से पता चलता है कि वयस्क जनसंख्या में 18-29 साल के लोगों की हिस्सेदारी 29.2 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में, देश में प्रत्येक तीन योग्य मतदाताओं में एक जेन-जी है। 2026 के लिए जारी जनसंख्या अनुमान के अनुसार, बिहार में जेन-जी वोटरों का हिस्सा सर्वाधिक है। यहां 18-29 साल के लोगों की स्वतंत्रता 36.8 प्रतिशत है। भारत में दुनिया की सबसे बड़ी जेन-जी जनसंख्या रहती है। यहां मौजूदा साल में 14-29 वर्ष के आयु के लोगों की संख्या 40.7 करोड़ है। चीन में 26.4 करोड़ व पाकिस्तान में 7.9 करोड़ जेन-जी हैं। वर्ष 2029 तक भारत में अल्फा भी 41.7 करोड़ होंगे।

अपने अधिकारों के प्रति मुखर

जेन-जी की सबसे अच्छी बात यह है कि वे अपने अधिकारों और भविष्य को लेकर पहले से कहीं अधिक सजग और मुखर हो गए हैं। स्टैटिस्टा के आंकड़ों के अनुसार, साल 2024 से 2026 के बीच दुनिया में कम से कम 10 देशों में बड़े पैमाने पर युवा-नेतृत्व वाले प्रदर्शन देखने को मिले। जेन-जी के इन आंदोलनों के कारण अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन उनकी मूल मांगे लगभग एक जैसी हैं, जिनमें बेहतर शिक्षा, रोजगार, भ्रष्टाचार पर रोक, लोकतांत्रिक और जवाबदेह शासन की मांग शामिल है।

एक फोन पर दुनिया मुट्ठी में

आज की युवा पीढ़ी इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में

बड़ी हुई है। जेन-जी (जेड) केवल डिजिटल दुनिया में ही रमा नहीं रहता, वह आभासी दुनिया में अपनी मौजूदगी दर्ज नहीं कराना चाहता, बल्कि विश्व स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक बदलाव में निर्णायक भूमिका निभाने को तत्पर है।

नकारात्मक पहलू

हाल ही में हुए एक रिसर्च ने यह संकेत दिया है कि इस पीढ़ी में मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं, और इसका मुख्य कारण सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग हो सकता है। वास्तव में, डिजिटल नेटिव के तौर पर जेन-जी तकनीकी रूप से काफी सम्पन्न तो है, लेकिन इन माध्यमों की अपनी चुनौतियां हैं। अपुष्ट सूचनाएं, अफवाहें तथा भ्रामक सामग्री अक्सर तनाव का कारण भी बन जाती हैं। इसका एक ताजा उदाहरण पंजाब की लवली प्रोफेशनल संस्थान का हमें देखने को मिलता है, जहां एक छात्रा के साथ हुए शारीरिक यौन शोषण की अफवाह ने कितना बड़ा बवाल खड़ा कर दिया। जेन-जी के जीवन को सोशल मीडिया कई तरह से कुप्रभावित कर रहा है:

सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रभाव

विशेषज्ञों का मानना है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों, जैसे इंस्टाग्राम, टिकटॉक, और स्नैपचैट पर बिताए गए लम्बे समय के कारण जेन जेड के युवाओं में चिंता, अवसाद, और आत्मसम्मान की समस्याएं बढ़ रही हैं। मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं युवाओं में कार्यक्षमता घटने का एक बड़ा कारण बन रही हैं। इस तरह की परेशानियों से बचे रहने के लिए विशेषज्ञ सोशल मीडिया से ब्रेक लेने, नियमित व्यायाम और मेडिटेशन से मानसिक संतुलन बनाए रखने की राय देते हैं।

लाइफस्टाइल और आहार की गड़बड़ी ने कई तरह की क्रॉनिक बीमारियों का खतरा बढ़ा दिया है। हाई कोलेस्ट्रॉल हो या ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और दिल की बीमारियां अब काफी आम होती जा रही हैं। आज की जेन-जी पीढ़ी खुद को पहले से ज्यादा स्मार्ट, टेक-फ्रेंडली और फास्ट लाइफ जीने वाली मानती है, लेकिन इसी तेज गति की जिंदगी ने उनमें भी कई तरह की बीमारियों का जोखिम काफी बढ़ा दिया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, देर रात तक मोबाइल और लैपटॉप के इस्तेमाल, घंटों बैठे रहकर पढ़ाई या काम करने, जंक फूड पर बढ़ती निर्भरता और नींद की कमी ने युवाओं की सेहत पर गहरा असर डाला है। अगर समय रहते इन आदतों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो कई ऐसी बीमारियां कम उम्र में ही आपक घेर सकती हैं, जिनके लिए जीवनभर दवाइयों पर निर्भर रहना पड़ सकता है। ■■■

महाराष्ट्र में गहराता सूखा संकट एक गम्भीर समस्या है। इसके लिए दूरदर्शी नीतियों, आधुनिक तकनीक, कड़े नियमों और जन-भागीदारी की आवश्यकता है।

डॉ. दीपक कोहली

महाराष्ट्र में गहराता सूखा संकट

महाराष्ट्र वर्तमान समय में एक अत्यंत गम्भीर प्राकृतिक और सामाजिक-आर्थिक आपदा का सामना कर रहा है। राज्य का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा भीषण सूखे की चपेट में है, जिसने जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। कृषि प्रधान इस प्रदेश में पानी की हर एक बूंद के लिए हाहाकार मचा हुआ है और किसानों के चेहरे पर बेबसी साफ देखी जा सकती है। सूखे की यह मार केवल फसलों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने पीने के पानी की उपलब्धता, पशुधन के अस्तित्व और सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव को हिलाकर रख दिया है। मराठवाड़ा, विदर्भ और उत्तर महाराष्ट्र जल संकट के मुख्य केंद्र बने हुए हैं, जहां नदियां-नाले सूख चुके हैं और जलाशयों का जलस्तर ऐतिहासिक निचले स्तर पर पहुंच गया है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण जनसंख्या को पीने का पानी जुटाने के लिए कई किलोमीटर पैदल तय करना पड़ रहा है।

महाराष्ट्र में सूखे का यह संकट केवल 1 वर्ष की कम वर्षा का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ कई मानव निर्मित और नीतिगत कमियां जिम्मेदार हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण मानसूनी बारिश का चक्र अनिश्चित हो गया है। इसके अलावा भूजल का अति-दोहन, अव्यावहारिक फसल चक्र और जल संसाधनों का कुप्रबंधन भी इस स्थिति को भयावह बनाता है। यदि हमें इस त्रासदी से निपटना है और राज्य के भविष्य को सुरक्षित करना है, तो तात्कालिक राहत कार्यों के साथ-साथ सुदूर भविष्य को ध्यान में रखकर व्यापक और ठोस उपायों को अमल में लाना होगा।

इस दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाना है। मानसून के दौरान बहकर बेकार जाने वाले पानी को सहेजने के लिए पारम्परिक जल निकायों जैसे तालाबों, बावड़ियों और झीलों का जीर्णोद्धार कर जमा गाद निकालना आवश्यक है। इससे जलाशयों की जल धारण

क्षमता बढ़ेगी और भूजल स्तर में सुधार होगा। इसके साथ ही चेक डैम, नाला बंडिंग और समोच्च खाईयों का निर्माण कर बहते पानी को मिट्टी में गहराई तक रिसाना होगा। प्रत्येक भवन के लिए छत पर वर्षा जल संचयन प्रणाली को अनिवार्य कर इसे एक जन-आंदोलन का रूप देना आवश्यक है।

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण पहलू कृषि क्षेत्र में जल प्रबंधन और फसल चक्र में सुधार करना है। राज्य में गन्ने जैसी अत्यधिक पानी मांगने वाली फसल बहुत अधिक है, जो विशाल मात्रा में भूजल और नहर के पानी की खपत करती है। सरकार और कृषि वैज्ञानिकों को मिलकर किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रोत्साहित करना होगा। गन्ने और धान के स्थान पर कम पानी में उगने वाली फसलों, जैसे बाजरा, ज्वार, रागी, दालें और तिलहन की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके अलावा टपका (ड्रिप) और छिड़काव (स्प्रिंकलर) जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को अपनाने पर प्रोत्साहन मिलना चाहिए, जिससे पानी की खपत में 70 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। भूजल प्रबंधन भी इस समाधान का एक अत्यंत संवेदनशील आधार है। अनियंत्रित बोरवेल खनन के कारण भूजल स्तर खतरनाक गहराई तक चला गया है। इसे रोकने के लिए राज्य में सख्त भूजल विनियमन नीति लागू की जानी चाहिए, जिसके तहत निजी ट्यूबवेल की गहराई व संख्या पर कानूनी प्रतिबंध लगाए जाएं। भूजल के पुनःभरण के बिना पानी निकालने की अनुमति किसी परिस्थिति में न मिले। इसके साथ ही 'डार्क जोन' क्षेत्रों का मानचित्रण करके वहां पानी के व्यावसायिक दोहन पर पूरी तरह रोक लगाई जानी चाहिए।

वृक्षारोपण और मृदा संरक्षण को भी दीर्घकालिक समाधान के रूप में देखा जाना चाहिए। वनों की अंधाधुंध कटाई ने धरती की पानी सोखने की प्राकृतिक क्षमता घटा दी है। इसलिए बड़े पैमाने पर वनीकरण अभियान चलाया जाना चाहिए। पेड़ न केवल बारिश को आकर्षित करते हैं, बल्कि अपनी जड़ों से मिट्टी को बांधकर वर्षा जल को जमीन के नीचे पहुंचाते हैं। पहाड़ी ढलानों पर समोच्च खेती और वृक्षारोपण करने से मृदा अपरदन रुकता है और जलस्तर में सुधार होता है।

तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग करके भी सूखे के प्रभाव को कम किया जा सकता है। सरकार को उपग्रह डेटा और मौसम सम्बंधी सटीक पूर्वानुमानों का उपयोग कर पूर्व चेतावनी प्रणाली विकसित करनी चाहिए, ताकि किसान समय रहते अनुकूल फसलों का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त नहरों से जल रिसाव और चोरी रोकने के लिए डिजिटल व स्वचालित वितरण प्रणालियों का उपयोग किया जाना चाहिए।

सूखे से निपटने में सामुदायिक भागीदारी और स्थानीय निकायों की भूमिका सर्वाधिक प्रभावी हो सकती है। 'जल पंचायत' जैसी अवधारणाओं को बढ़ावा देकर ग्रामीणों को स्वयं जल उपयोग तय करने का अधिकार मिलना चाहिए। महाराष्ट्र के 'रालेगण सिद्धि' और 'हिवरे बाजार' जैसे गांवों ने समुदाय-आधारित जल प्रबंधन से सूखे पर विजय प्राप्त करने की मिसाल पेश की है। इन सफल मॉडलों को पूरे राज्य में लागू करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण की दिशा में भी ठोस कदम उठाने होंगे। शहरी क्षेत्रों और उद्योगों से निकलने वाले गंदे पानी को सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के माध्यम से उपचारित कर निर्माण कार्यों, उद्योगों और उद्यानों में उपयोग किया जाना चाहिए। इससे ताजे पानी के स्रोतों पर दबाव कम होगा। ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रोकने के लिए गैर-कृषि रोजगार पैदा करना आवश्यक है। मनरेगा जैसी योजनाओं का उपयोग जल संरचनाओं के निर्माण, तालाब खुदाई और वनीकरण में करके ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर रोजगार और गांव को जल सुरक्षा प्रदान की जा सकती है। पशुपालन और हस्तशिल्प जैसे सहायक व्यवसायों से कृषि पर निर्भरता भी कम होगी।

इन दीर्घकालिक उपायों के साथ तात्कालिक राहत कार्यों में तेजी और पारदर्शिता लानी होगी। प्रभावित क्षेत्रों में टैंकरों से पेयजल आपूर्ति सुचारू की जाए, मवेशियों के लिए चारा शिविर स्थापित किए जाएं और आपात स्थिति में जल-ट्रेनों से पानी पहुंचाने की व्यवस्था हमेशा तैयार रहे। अंततः, प्रशासनिक दक्षता और राजनीतिक इच्छाशक्ति की भूमिका सबसे अहम है। जल संबंधी सभी विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के लिए एक एकीकृत केंद्रीय जल प्राधिकरण का गठन किया जाना चाहिए। ■■■

मतदाता सूची की शुद्धता लोकतंत्र की नींव है। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) इसी उद्देश्य से लाया गया है, पर विपक्ष इसे विवादास्पद बना रहा है। क्या विरोध प्रक्रिया की कमियों पर है या सिर्फ राजनीतिक?

पारदर्शिता की प्रासंगिकता या विरोध की प्रक्रिया

मतदान की निष्पक्षता केवल मतदान-केंद्र पर नहीं, मतदाता सूची से भी तय होती है। यदि पात्र नागरिक का नाम सूची में न हो, मृत या स्थायी रूप से स्थानांतरित व्यक्ति की प्रविष्टि बनी रहे, घुसपैठियों के नाम शामिल हों अथवा एक ही मतदाता का नाम अनेक स्थानों पर दर्ज हो, तो जनादेश की शुचिता प्रभावित होती है। इसलिए विशेष गहन पुनरीक्षण-एसआईआर का मूल उद्देश्य स्पष्ट है। पात्र मतदाता शामिल रहें और अपात्र की जांच हो। प्रश्न यह है कि इस उद्देश्य का विरोध क्यों हो रहा है और यह भी कि क्या प्रक्रिया की आलोचना को केवल विरोधी राजनीति कहकर टाला जा सकता है?

एसआईआर भारत में पहली बार नहीं हो रहा। निर्वाचन आयोग के 2025 के आदेश में 1952-56, 1957, 1961, 1965-66, 1983-84, 1987-89, 1992-95 और 2002-04 के गहन पुनरीक्षणों का उल्लेख है। ये अलग-अलग समय पर देश के सभी या कुछ हिस्सों में किए गए। बिहार में इससे पहले ऐसा पुनरीक्षण 2003 में हुआ था। अतः यह प्रक्रिया किसी एक सरकार या दल की आकस्मिक खोज नहीं, निर्वाचन व्यवस्था की पुरानी जिम्मेदारी है।

इसका संवैधानिक आधार भी स्पष्ट है। अनुच्छेद 324 चुनाव और मतदाता-सूची की तैयारी का नियंत्रण निर्वाचन आयोग को देता है। अनुच्छेद 326 भारतीय नागरिकता और 18 वर्ष की आयु को मतदाता-पात्रता से जोड़ता है। अनुच्छेद 325 धर्म, जाति, नस्ल या लिंग के आधार पर किसी को सूची से बाहर करने पर रोक लगाता है। जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 21 पुनरीक्षण और धारा 24 अपील का प्रावधान करती है। अर्थात सूची की शुद्धता संविधानसम्मत उद्देश्य है, पर पात्र नागरिक का संरक्षण भी उतना ही संवैधानिक दायित्व है।

अलकेश चतुर्वेदी

पलायन, मृत्यु की सूचना में देरी और दोहरी प्रविष्टियां प्रशासनिक वास्तविकताएं हैं। किसी पते पर असामान्य रूप से बड़ी संख्या में नाम हों तो सत्यापन उचित है, लेकिन संख्या मात्र से फर्जीवाड़ा सिद्ध नहीं होता। इसी तरह, गैर-नागरिकों के नाम होने की शिकायत भी प्रमाण से जांची जानी चाहिए-किसी धर्म, भाषा, नाम या मोहल्ले के आधार पर किसी को विदेशी कहना अनुचित है। एसआईआर का औचित्य ऐसे सवालों का निष्पक्ष सत्यापन है, पहले से दोषी ठहराना नहीं। बिहार में अंतिम सूची में लगभग 7.42 करोड़ मतदाता थे और पुनरीक्षण के दौरान 21 लाख से अधिक नए मतदाता भी जोड़े गए। यह तथ्य दिखाता है कि प्रक्रिया का घोषित काम केवल नाम हटाना नहीं, पात्र लोगों को जोड़ना भी है। फिर विरोध किस बात का है? विपक्ष की ओर से नाम कटने की आशंका, कागजात जुटाने की कठिनाई, समय-सीमा और सॉफ्टवेयर की पारदर्शिता पर सवाल उठे हैं। यदि मतदाता सूची में सुधार के हर प्रयास को लोकतंत्र-विरोधी कह दिया जाए, तो सूची की पुरानी विसंगतियां सुधारने का रास्ता क्या होगा? जो दल वर्षों तक सूची को लेकर अपेक्षाकृत मौन रहे, वे सुधार शुरू होते ही उसे लोकतंत्र का अंत बताने लगें-तो नागरिक पूछेंगे ही: सूची की त्रुटि रहने देना लोकतांत्रिक अधिकार है या उसे ठीक करना? पुरानी सूची बहाल करने की मांग भी अपने-आप में समाधान नहीं, यदि उसी सूची में मृत, स्थानांतरित या दोहरी प्रविष्टियों

की समस्या मौजूद हो। लोकतांत्रिक विरोध का उत्तर प्रमाण और वैकल्पिक उपाय होना चाहिए, केवल भय और नारे नहीं। लेकिन एसआईआर के उद्देश्य का समर्थन करने का अर्थ यह नहीं कि निर्वाचन आयोग की हर कार्रवाई प्रश्नों से परे है। ज्ञानेश कुमार के मामले ने आयोग की निर्णय-प्रक्रिया पर गम्भीर बहस खड़ी की है। मीडिया रिपोर्टों में दो निर्वाचन आयुक्तों द्वारा कुछ निर्णयों पर आपत्तियां दर्ज कराने की बात आई। आयोग ने कहा कि आंतरिक विमर्श में अलग-अलग राय सामान्य है, एसआईआर का निर्णय सर्वसम्मति से हुआ और उसने सॉफ्टवेयर की समीक्षा सहित कुछ प्रक्रियागत सुधार घोषित किए। 29 सितम्बर को सर्वोच्च न्यायालय ने आयोग की कार्यप्रणाली और एसआईआर को चुनौती देने वाली याचिका पर अगले सप्ताह सुनवाई करने पर सहमति दी। याचिका पर सुनवाई स्वीकार होना आरोपों को सिद्ध करना नहीं है; पर यह बताता है कि निर्णय-प्रक्रिया पर उठे प्रश्न संस्थागत रूप से विचारणीय हैं। यहीं लोकतांत्रिक परिपक्वता की असली परीक्षा है। निर्वाचन आयोग बहु-सदस्यीय संवैधानिक संस्था है। इसलिए महत्वपूर्ण निर्णयों का अभिलेख, आयुक्तों की भूमिका और असहमति के निस्तारण की प्रक्रिया स्पष्ट होनी चाहिए। आयोग को पारदर्शिता से संकोच नहीं करना चाहिए-और विपक्ष को भी आरोपों को प्रमाण की कसौटी पर रखना चाहिए। यदि आपत्तियां केवल विचार-विमर्श का हिस्सा थीं, तो अभिलेख और प्रक्रिया यह स्पष्ट करें। यदि कहीं नियमों से विचलन हुआ, तो उसकी जवाबदेही तय हो। संस्था पर भरोसा न अंधसमर्थन से बनता है, न निराधार अविश्वास से, वह खुली प्रक्रिया से बनता है। मतदाता सूची की जांच का विचार वैश्विक लोकतंत्रों में भी मौजूद है। ब्रिटेन में औपचारिक निर्वाचन रजिस्टर 1832 के बाद बने, 1918 में वार्षिक घर-घर जांच शुरू हुई और 2014 में व्यक्तिगत पंजीकरण अपनाया गया। अमेरिका में ट्रम्प प्रशासन ने संघीय चुनावों के लिए नागरिकता के कागजाती प्रमाण से जुड़ा सेव एक्ट प्रस्तावित किया। व्यवस्थाएं भारत से भिन्न हैं, पर साझा चिंता यही है कि मतदाता-सूची अद्यतन और विश्वसनीय रहे। भारत की अपनी परम्परा में वैशाली के लिच्छवि-वज्जि गण-संघों की सभा और सामूहिक विमर्श की स्मृति मिलती है-आधुनिक मताधिकार से भिन्न, पर जन-भागीदारी के विचार की प्राचीन साक्षी। राष्ट्रहित की दृष्टि से एसआईआर का समर्थन इसलिए होना चाहिए कि हर पात्र नागरिक का मत सुरक्षित रहे और सूची की त्रुटियाँ सुधरें। साथ ही, ज्ञानेश कुमार प्रकरण की निष्पक्ष जांच और आयोग की निर्णय-प्रक्रिया में पारदर्शिता भी आवश्यक है। ■■■

सफलता

अभाविप की सच्ची सफलता यही है, जो विश्वविद्यालय परिसर में जीत दर्ज करने के साथ ही राष्ट्र निर्माण में भी अहम भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

अभाविप की जीत का लहराता पताका

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) केंद्रीय विश्वविद्यालयों एवं राज्य विश्वविद्यालयों के साथ महाविद्यालयों में हो रहे छात्र संघ चुनावों में लगातार शानदार जीत दर्ज कर रही है। राष्ट्रवादी छात्रों की हुंकार के सामने विपक्षी छात्र संगठन पूरी तरह हथियार डाल दिए हैं। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय परिसर के छात्र-छात्राएं युवाशक्ति, राष्ट्रवादी विचारधारा और छात्रहित के प्रति समर्पित संगठन के साथ खड़ी है। आज दौर में तकनीक का उपयोग करके कांग्रेस एवं वामपंथ छात्र संगठन युवाओं को भ्रमित करने का हमेशा प्रयास करते हैं। फिर अभाविप का विजय फताका आज दिल्ली से लेकर कन्याकुमारी तक के विश्वविद्यालयों में लहरा लगा है। हाल में ही देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए छात्र संघ चुनाव में अप्रत्याशित जीत दर्ज की है। यह परिणाम उन ताकतों के लिए भी स्पष्ट संदेश है, जो युवाओं को कॉमेडी, जातिवाद और देश की सेना व महापुरुषों को अपमानित करने वाली सोच से जोड़ना चाहती हैं। युवाशक्ति ने अपने वोट की ताकत से देश तोड़ने वाली विचारधारा को करारा जवाब दिया है। राष्ट्रवादी छात्रों की हुंकार से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपनी सफलता व जीत का परचम लहरा रहा है। केरल में विद्यार्थी परिषद का चुनाव हो या फिर दिल्ली विश्वविद्यालय में अभाविप ने अपनी जीत दर्ज की है। छात्रों का ही विश्वास है कि जहां-जहां पहले वामपंथी, कांग्रेस एवं अन्य दलों का दबदबा था, वहां भी अभाविप ने लगातार जीत दर्ज कर वामपंथी, कांग्रेस एवं अन्य दलों का किला ध्वस्त करने का कार्य की है। इसका श्रेय अभाविप के

राघव झा

उन लाखों सदस्यों का है जो लगातार छात्रों के बीच राष्ट्रीय भावना का प्रचार-प्रसार करना, राष्ट्रहित और छात्रहित के साथ लगातार छात्रों के बीच कार्य करते रहते हैं। यह विजय युवाशक्ति के विश्वास और कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का परिणाम है। देश के प्रतिष्ठित दिल्ली केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव में भी एबीवीपी का दबदबा रहा। अभाविप ने तीन पदों पर कब्जा कर लिया, जबकि एक पद इंडिपेंडेंट उम्मीदवार के खाते में गया। इन परिणामों को लेकर केंद्रीय मंत्री अमित शाह, जेपी नड्डा और किरेन रिजिजू समेत बीजेपी के कई वरिष्ठ नेताओं ने टिप्पणी की। इन चुनाव में प्रेसीडेंट पद पर एबीवीपी के यश डबास ने जीत प्राप्त की है। जबकि, सेक्रेटरी पद पर एबीवीपी की रिया छावड़ी और ज्वाइंट सेक्रेटरी पद पर एबीवीपी के ही लक्ष्य राज सिंह ने जीत प्राप्त की है। अध्यक्ष पद पर जीत प्राप्त करने के बाद यश डबास ने कहा कि पंजाब यूनिवर्सिटी से लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय तक छात्रों ने हमें जिताने का प्रयास किया। हमारे लिए सबसे पहला मुद्दा हॉस्टल्स और पीजी का सेफ्टी ऑडिट करना है। क्योंकि हम नहीं चाहते कि आने वाले समय में सत्य निकेतन जैसा हादसा दोबारा हो। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतिन नवीन ने भी कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय में एबीवीपी की छात्रसंघ चुनावों में ऐतिहासिक जीत पर मेरे सभी युवा साथियों को बधाई। यह जीत सकारात्मक और रचनात्मक छात्र राजनीति में युवाओं के लगातार विश्वास को दर्शाती है, जो 'राष्ट्र प्रथम' की भावना पर आधारित है। यह 'विकसित भारत' के विजन में योगदान देने के उनके मजबूत संकल्प को भी दर्शाती है। यदि भारतीय विश्वविद्यालयों की छात्र राजनीति की चर्चा की जाए, तो दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) का उल्लेख स्वाभाविक है। दोनों संस्थान लम्बे समय से वैचारिक बहस, छात्र नेतृत्व और लोकतांत्रिक राजनीति के प्रमुख केंद्र रहे हैं। विशेष रूप से जेएनयू में वामपंथी छात्र संगठनों का ऐतिहासिक प्रभाव रहा है, जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय में विभिन्न विचारधाराओं के बीच निरंतर लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती रही है।

ऐसे वैचारिक परिवेश में एबीवीपी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता और भारतीय ज्ञान-परम्परा को केंद्र में रखकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने का प्रयास किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय में एबीवीपी लम्बे समय से छात्रसंघ चुनावों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करती रही है, जिसके कारण वह छात्र राजनीति का एक प्रभावशाली संगठन बनी हुई है। वैचारिक स्तर पर एबीवीपी और वामपंथी छात्र संगठनों के दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। वामपंथी विचारधारा सामान्यतः वर्ग संघर्ष, सामाजिक एवं आर्थिक समानता, जातीय और लैंगिक न्याय तथा समाजवादी दृष्टिकोण पर बल देती है। इसके विपरीत एबीवीपी राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक अस्मिता, भारतीय ज्ञान-परम्परा और सभ्यतागत मूल्यों को छात्र जीवन तथा शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है। यही कारण है कि इतिहास, राष्ट्रवाद, शिक्षा नीति, भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे विषयों पर दोनों पक्षों के बीच समय-समय पर वैचारिक बहस होती रही है। हालांकि विश्वविद्यालय लोकतांत्रिक विमर्श के ऐसे मंच हैं, जहां विभिन्न विचारधाराओं का सह-अस्तित्व लोकतंत्र की शक्ति माना जाता है। इसलिए वैचारिक मतभेदों को संवाद, तर्क और संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर ही व्यक्त किया जाना चाहिए। स्वस्थ छात्र राजनीति वही है, जो असहमति का सम्मान करते हुए शैक्षणिक वातावरण, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रहित-तीनों को समान रूप से महत्व दे। एबीवीपी की विशेषता यह रही है कि उसने स्वयं को केवल वैचारिक बहस तक सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा और समाज से जुड़े अनेक रचनात्मक विषयों पर सक्रिय भूमिका निभाई है। नई शिक्षा नीति, मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान-परम्परा, कौशल विकास, स्टार्टअप संस्कृति, नवाचार और डिजिटल शिक्षा जैसे विषयों पर परिषद निरंतर संवाद और जनजागरण करती रही है। परिषद का मानना है कि यदि भारत वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाना चाहता है, तो उसकी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ-साथ भारतीय ज्ञान, दर्शन और सांस्कृतिक विरासत से भी प्रेरणा ग्रहण करे। इसी दृष्टि से योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, स्थानीय भाषाओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ने पर विशेष बल दिया जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी भी बड़े छात्र संगठन की तरह एबीवीपी भी समय-समय पर आलोचनाओं और वैचारिक मतभेदों का सामना करती रही है। किसी भी संगठन का मूल्यांकन उसके दीर्घकालिक योगदान, संगठनात्मक विस्तार, शिक्षा सुधार, सामाजिक सरोकारों तथा राष्ट्रहित में किए गए कार्यों के आधार पर किया जाना चाहिए। सात दशकों से अधिक की अपनी यात्रा में एबीवीपी ने छात्र राजनीति को राष्ट्रीय विमर्श, सामाजिक उत्तरदायित्व और नेतृत्व निर्माण से जोड़ने का निरंतर प्रयास किया है। आज विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। ज्ञान, चरित्र, सेवा और राष्ट्रनिष्ठा से युक्त युवा ही आत्मनिर्भर, विकसित तथा सांस्कृतिक रूप से सशक्त भारत के निर्माण के वास्तविक आधार बन सकते हैं। ■■■

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

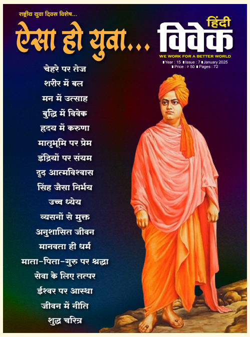

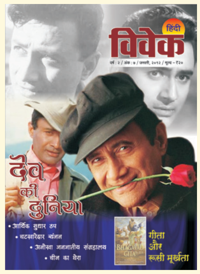

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

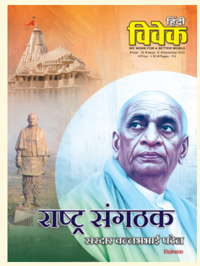

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

एशियाई खेल-2026

नारी शक्ति ने लगाई स्वर्ण पदकों की झड़ी

भारतीय खिलाड़ियों ने विगत शुक्रवार को 6 स्वर्ण सहित कुल 12 पदक जीतकर परचम लहराया। विदित हो कि भारत ने जो 6 स्वर्ण जीते उनमें से 4 महिला खिलाड़ियों ने जीते।

प्रवीण सिन्हा

एशियाई खेलों के इतिहास में भारत के लिए इससे बेहतर दिन और कोई साबित नहीं हो सकता था। भारतीय दल ने विगत शुक्रवार को 6 स्वर्ण सहित कुल 12 पदक जीत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। सबसे शानदार- सबसे यादगार और ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त करते हुए भारतीय महिला एथलीटों ने साबित कर दिया कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चैम्पियन खिलाड़ियों को मात देने का उनमें भरपूर माद्दा है। मुकाबले के 13वें दिन भारत ने जो 6 स्वर्ण जीते उनमें से 4 महिला खिलाड़ियों ने जीते। इन स्वर्णिम सफलताओं के बीच सबसे बड़ी बात यह रही कि भारतीय खिलाड़ियों ने इतिहास रचते हुए पदक जीते।

महिला तीरंदाजी टीम ने रचा इतिहास

आए दिन सवाल उठ रहा था कि भारत इस बार पिछली बार एशियाई खेलों में जीते गए कुल पदकों की बराबरी कर पाएगा या नहीं? उन सभी खेल विशेषज्ञों को जवाब दिया है 44 वर्षों बाद भारत को एशियाई हॉकी के शिखर पर बिठाने वाली महिला हॉकी टीम ने, ओलम्पिक पदक विजेता लवलीना बोर्गोहेन (महिला मुक्केबाजी-75 किग्रा) ने, महिला मुक्केबाजी-65 किग्रा वर्ग की स्वर्ण पदक विजेता परवीन हुडा ने और इतिहास रचते हुए स्वर्ण पदक जीतने वाली महिला तीरंदाजी रिकर्व टीम ने, जिसने पहली बार एशियाई खेलों में इस स्पर्धा का स्वर्ण जीत शान से भारतीय परचम लहराया। इस दौरान भारतीय टीम या खिलाड़ियों ने चीन और दक्षिण कोरिया जैसे सुपर पावर को मात देते हुए अगले 2028 लॉस एंजिल्स ओलम्पिक के लिए भी क्वालीफाई कर लिया।

महिला रिकर्व टीम तो मुद्दत से दक्षिण कोरिया को हराने की कोशिश करती रही। लेकिन तमाम विश्व विजेताओं और ओलम्पिक पदक विजेताओं से लैस कोरियाई टीम एशियाई खेलों में अपने आसपास भी किसी को फटकने नहीं देती थी। रिकर्व तीरंदाजी में उनके दबदबे का स्थिति ऐसी है कि 1998 बैंकाक एशियाई खेलों से जो उन्होंने महिला रिकर्व तीरंदाजी के स्वर्ण जीतने का सिलसिला शुरू किया तो जापान में भी उन पर लगाम नहीं कसी जा पा रही है। लेकिन अंकिता भक्त, कृति शर्मा और कुमकुम मोहोद की भारतीय तिकड़ी ने फाइनल मुकाबला शुरू होते ही अपना दबदबा कायम कर लिया। भारतीय टीम का ध्यान पूरी तरह से स्पर्धा पर केंद्रित था। उनपर तगड़ी विपक्षी टीम के रुतबे का कोई असर नहीं दिखा। फाइनल से पहले उन्होंने मंगोलिया (6-0), चीनी ताइपे (6-0) और चीन (5-1) को एकतरफा अंदाज में हराया था। बढ़े हुए आत्मविश्वास के साथ अंततः भारतीय टीम ने कोरिया पर 5-3 से जीत दर्ज कर इतिहस रच दिया। अब एशियाई खेलों की महिला रिकर्व टीम की विजेता के रूप में भारतीय टीम को अगले लॉस एंजिल्स ओलम्पिक खेलों में भी सीधा प्रवेश मिल गया है।

हॉकी टीम ओलंपिक के लिए क्वालीफाई

मुकाबले के 13वें दिन की समाप्ति के ठीक पहले महिला हॉकी टीम ने न केगल गत विजेता चीन को 1-0 से हरा 44 वर्षों बाद स्वर्ण पदक जीता, बल्कि लॉस एंजिल्स ओलम्पिक के लिए भी अपना टिकट पक्का कर लिया। विश्व की नम्बर 4 चीन की टीम बेहतर दिखाई दी, लेकिन भारतीय टीम जीत के प्रति कहीं ज्यादा दृढ़ संकल्प और बेहतर रणनीति के साथ खेली। फाइनल का एकमात्र गोल लालरेमसियामी ने किया, जबकि भारत की दीपिका 21 और नवनीत कौर 10 गोल कर टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा स्कोर करने वाली शीर्ष दो स्थानों पर रही। ये भारतीय टीम की तैयारी और आत्मविश्वास का एक बेहतरीन उदाहरण है।

स्वर्णिम पंचों की लगी झड़ी

एशियाई खेलों में भारत को हमेशा से कड़ी चुनौती मिलती रही है। विशेषकर महिला मुक्केबाजी में तो 2014 इंचियन एशियाई खेलों में एम सी मैरीकॉम के स्वर्ण जीतने के बाद भारतीय मुक्केबाज बेहतर प्रदर्शन करने को तरस रही थी। लेकिन ओलम्पिक पदक विजेता और बर्थडे गर्ल लवलीना बोर्गोहेन ने 75 किग्रा भारवर्ग में ताबड़तोड़ अंदाज में चीन की जी बाओ को 5-0 से हराकर स्वर्ण पदक क्या जीता, उसके बाद तो पदकों की झड़ी सी लग गयी। इसके बाद दोपहर में करीबन आधे घंटे के अंदर परवीन हुडा (महिला -65 किग्रा) और अंकुश पंघाल (पुरुष- 80 किग्रा) ने भी लगातार दो स्वर्ण पदक जीत बॉक्सिंग रिंग में खलबली मचा दी। विदित हो कि मैरीकॉम के बाद एशियाई खेलों में महिला मुक्केबाजी का स्वर्ण पदक जीतने वाली लवलीना दूसरी और परवीन हुडा तीसरी खिलाड़ी हैं। भारतीय खिलाड़ियों का जलवा मुक्केबाजी से कुश्ती मैट तक पहुंच गई और सुजीत कलकल ने पुरुषों की 65 किग्रा वर्ग कुश्ती में ओलम्पिक चैंपियन ताजिकिस्तान के अब्दुलमाजिद कुदीव के जबड़े से जीत छीन स्वर्ण पदक जीत लिया। दरअसल, सुजीत मुकाबले में 2-9 से पिछड़ चुके थे और विपक्षी पहलवान की जीत लगभग तय दिख रही थी। लेकिन सुजीत ने धैर्य और बेहतर सूझबूझ का परिचय देते हुए तीसरे व अंतिम दौर तक मुकाबला 10-9 से अपने नाम कर तहलका मचा दिया। 2026 एशियाई खेलों में भारत के लिए कुश्ती मैट से निकला यह पहला स्वर्ण पदक है। खेलप्रेमियों को याद दिलाने के लिए बता दें कि पुरुष कुश्ती का यह वही भारवर्ग है जिसमें स्टार पहलवान योगेश्वर दत्त (2014) और बजरंग पूनिया (2018) में स्वर्ण पदक जीत चुके हैं।

भारतीय टीम ने एशियाई खेल महाशक्ति चीन और बहरीन को भी पछाड़ते हुए महिला रिले में भारत की समृद्ध परंपरा को कायम रखा। भारतीय महिला 4द400 मीटर रिले टीम पिछले 44 वर्षों से लगातार 12 एशियाई खेलों में पदक जीतने का सिलसिला जारी रखा है। भारतीय परचम लहराने का जो सिलसिला 1982 दिल्ली एशियाई खेलों में शुरू हुआ वह 2026 जापान एशियाई खेलों तक जारी है। यही नहीं, इस दौरान भारतीय टीम ने 7 बार स्वर्ण और 5 बार रजत पदक जीते जो इस स्पर्धा में भारत के दबदबे को बखूबी दर्शाता है।

वाशी में गणेश भक्तों की भव्य सेवा

पिछले 10 वर्षों से कच्छ युवक संघ, सर्व समाज ट्रस्ट और कच्छी भानुशाली युवा संघ सभी गणेश भक्तों की सेवा कर रहे हैं। इस वर्ष भी सेक्टर-6, वाशी स्थित जागृतेश्वर शिव मंदिर के विसर्जन तालाब के पास एक भव्य पंडाल लगाया गया।

सभी मंडलों के मुख्य सदस्यों को केसरिया पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। हर गणेश प्रतिमा पर फूल बरसाए गए और श्रीफल चढ़ाए गए। भक्तों के लिए इडली-चटनी, तीन क्रशिंग मशीनों से निकाला गया ताजा गन्ने का रस, पॉपकॉर्न, चाय और ठंडा पानी जैसी व्यवस्था की गई। कुल 40,000 भक्तों ने पंडाल के दर्शन किए और जलपान का लाभ लिया। पूरे कार्यक्रम में कागग या प्लास्टिक का एक भी कचरा नहीं हुआ। दोबारा इस्तेमाल होने वाली प्लेटों और गिलासों का ही प्रयोग किया गया। इस दौरान टीम के सदस्यों अल्पेश भाई भानुशाली और उदयवीर सिंह (बाबूजी) को भी याद किया गया। कार्यक्रम दोपहर 3 बजे शुरू होकर देर रात 2:30 बजे तक चला। उक्त जानकारी हिंदी विवेक मासिक पत्रिका के प्रतिनिधि दीपक गांधी ने दी।

छात्र सर्वेश शर्मा बनाएगा भारतीय सेना के लिए ड्रोन

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के राजकीय पॉलीटैक्निक कालेज हमीरपुर (बड़ू) के छात्र सर्वेश शर्मा ने भारतीय थल सेना की एक बहुत बड़ी समस्या का समाधान निकालते हुए एक ऐसा ड्रोन तैयार करने में सफलता प्राप्त की है, जोकि न तो दुश्मन के राडार की पकड़ में आएगा और न ही कोई भी जैमर इसे जाम कर पाएगा। कम्प्यूटर इंजीनियरिंग के पांचवें सेमेस्टर के छात्र सर्वेश शर्मा के इस प्रोजेक्ट के लिए रक्षा मंत्रालय की डिफेंस इनोवेशन ऑर्गेनाइजेशन (डीआईओ) एवं इनोवेशन फॉर डिफेंस इक्सीलेंस (आईडैक्स) की ओर से 3.50 करोड़ रुपए की ग्रांट मंजूर की गई है।

बिट्टू तबाही ने सम्भाला सफाई मोर्चा

मध्य प्रदेश की अजनार नदी का अकेले ही कायाकल्प करने का दावा कर चर्चा में आए बिट्टू तबाही (सुरेंद्र सिंह चौधरी) का गुरुग्राम और दिल्ली- नोएडा में सफाई अभियान चलाया। अपनी टीम के साथ सफाई में जुटे बिट्टू ने गुरुग्राम से 2,435 किलो कचरा और नोएडा के यमुना युवा शक्ति घाट किनारे से 985 किलो कचरा हटाया।

बिट्टू और उनकी टीम पहुंची उस क्षेत्र में, जहां सड़क किनारे जगह-जगह प्लास्टिक और कचरा जमा था। जो सड़कों पर पड़े प्लास्टिक आवारा पशुओं के लिए बड़ा खतरा बन सकता है, खाते समय वे गलती से प्लास्टिक निगल सकते हैं। स्थानीय लोगों के साथ मिलकर टीम ने क्षेत्र से 2,435 किलो कचरा हटाया।

गांधीनगर स्टेशन सूरज से बनाएगा बिजली

जयपुर के गांधी नगर रेलवे स्टेशन पर 1,376 किलोवाट का सोलर पावर प्लांट लगाया गया है। ऐसा माना जा रहा है कि इसके लगने से लगभग 25 लाख यूनिट बिजली बनने की आशा है। स्टेशन की छत पर लगे सोलर पैनल से क्लीन एनर्जी को बढ़ावा मिलेगा और बिजली की बचत होगी

सेंसर बोर्ड की नई सूची में हिंदी विवेक के पद्मश्री रमेश पतंगे व लेखक विनोद अनुपम भी शामिल

सेंसर बोर्ड की नई सूची विगत दिवस जारी कर दी गई है। ज्ञातव्य हो कि इस नई सूची में हिंदी विवेक के हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष पद्मश्री रमेश पतंगे व लेखक विनोद अनुपम को शामिल किया गया है। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने इस 18-सदस्यीय नई समिति का पुनर्गठन किया है, जिसका कार्यकाल अगले 3 वर्षों के लिए होगा। नए बोर्ड के अध्यक्ष शशि शेखर वेम्पति बने रहेंगे। इस नई सूची में फिल्म, टीवी, संगीत, साहित्य और रंगमंच जगत से जुड़ी कई बड़ी हस्तियों को शामिल किया गया है। सेंसर बोर्ड के सभी 18 सदस्यों में प्रीति जिंटा (अभिनेत्री), पंकज त्रिपाठी (अभिनेता), सुनील शेट्टी (अभिनेता), प्रियदर्शन (दिग्गज फिल्म निर्माता/निर्देशक), रिकी केज (प्रसिद्ध ग्रैमी विजेता संगीतकार), रूपाली गांगुली (टीवी अभिनेत्री), मनोज जोशी (दिग्गज अभिनेता), पल्लवी जोशी (अभिनेत्री व निर्माता), प्रसेनजीत चटर्जी (दिग्गज बंगाली अभिनेता), हंसराज हंस (सूफी गायक और राजनेता), नीला माधब पंडा (फिल्म निर्माता), अभिषेक जैन (गुजराती फिल्म निर्माता), सुप्रिया यारलागड्डा (तेलुगु फिल्म निर्माता/अभिनेत्री), विनोद अनुपम (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म समीक्षक), यतींद्र मिश्रा (प्रसिद्ध लेखक और कवि), निशिगंधा वाड (मराठी व हिंदी अभिनेत्री), वामन केंद्रे (थिएटर निर्देशक - पुराने बोर्ड से बरकरार), रमेश पतंगे (लेखक और विचारक - पुराने बोर्ड से बरकरार) के नाम शामिल हैं।

अखिल भारतीय महिला किसान कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन

नई दिल्ली। भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय महिला किसान कार्यकर्ता सम्मेलन का शुभारम्भ बुधवार को दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में किया गया। सम्मेलन का शुभारम्भ गौ पूजन, भगवान बलराम पूजन व ध्वजारोहण के उपरांत 'हम भारत की नारियां वैभव लाएंगी' के उद्घोष के साथ किया गया। उक्त अवसर पर मंच पर मुख्य अतिथि के रूप मे कोटा कृषि विश्वविद्यालय की कुलपति विमला डूंकवाल, अखिल भारतीय महिला संयोजिका मंजू दीक्षित, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष सुशीला विश्नोई, अखिल भारतीय मंत्री वीणा सतीश, अखिल भारतीय अध्यक्ष साईं रेड्डी, अखिल भारतीय महामंत्री मोहिनी मोहन मिश्र आदि उपस्थित थे।

बीड के उद्योजक तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री बलभीमरावजी (दादा) जाहीर पाटील का 85वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर संस्कृत भारती के प्रांत अध्यक्ष मा. डॉ. पि.के. दादा कुलकर्णी, विश्व हिंदू परिषद प्रांत सदस्य मा. डॉ. मुरलीजी जेसवाणी, गोसेवा गतिविधि प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख मा. रविजी देशमुख, गोसेवा गतिविधि प्रांत सह संयोजक मा. आनंदजी बार्शीकर, विश्व हिंदू परिषद जिला सहमंत्री गणेश गुरखुदे और वैभव वाघमारे उपस्थित थे।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
When Business Picks Up, Let Your Fleet Keep Up.
Grow with TJSB's Fleet Term Loan
5 Years Repayment Period
Loan up to Rs.1 Crore*
Purchase of Commercial Vehicles
*T&C Apply
www.tjsb.bank.in | : 022-48897203